CHAPTER SEVEN	**अध्याय सात**
Truth; God; Death	**सत्य, ईश्वर, मृत्यु**
-1-	-१-
What Do We Mean by Death?	मृत्यु से हमारा अभिप्राय क्या है?
Death awaits each one of us, whether we like it or not. You may be a high government official with titles, wealth, position, and a red carpet, but there is this inevitable thing at the end of it. So what do we mean by death? By death we obviously mean putting an end to continuity, do we not? There is a physical death, and we are a little bit anxious about it, but that does not matter if we can overcome it by continuing in some other form. So when we ask about death, we are concerned with whether there is continuity or not. And what is the thing that continues? Obviously, not your body because every day we see that people who die are burned or buried.	हम चाहें या न चाहें, मृत्यु सदैव हमारी प्रतीक्षा में रहती है। आप भले ही अनेक उपाधियों से अलंकृत कोई उच्च सरकारी अधिकारी हों या धन-संपदा, प्रतिष्ठा, मान-सम्मान से विभूषित कोई व्यक्ति हों, परंतु सब के अंतिम छोर पर यह अपरिहार्य मृत्यु उपस्थित रहती है। तो, मृत्यु से हमारा अभिप्राय क्या है? मृत्यु का अर्थ हम यही लगाते हैं--निरंतरता का अंत, है न? एक तो होती है शारीरिक मृत्यु, जिसे लेकर हमें कुछ व्यग्रता रहती है, परंतु यह तो हल हो जाएगी, यदि हम किसी भी अन्य रूप मे बने रह सकें। इसीलिए जब हम मृत्यु के बारे में जानना चाहते हैं, तब हमारा सरोकार इस बात से रहता है कि निरंतरता रहती है अथवा नहीं। और, वह क्या है जो निरंतर रहता है--स्पष्ट है कि वह आपका शरीर तो नहीं है क्योंकि हम प्रतिदिन देखते हैं कि जो लोग मर जाते हैं, उन्हें दहन या दफन कर दिया जाता है।
-2-	-२-
What Continues?	निरंतर क्या रहता है?
Therefore, we mean, do we not, a supersensory continuity, a psychological continuity, a thought continuity, a continuity of character, which is termed the soul, or what you will. We want to know if thought continues. That is, I have meditated, I have practiced so many things, I have not finished writing my book, I have not completed my career, I am weak and need time to grow strong, I want to continue my pleasure, and so on—and I am afraid that death will put an end to all that. So, death is a form of	अतः निरंतरता से हमारा अभिप्राय अतींद्रिय सुख की निरंतरता से है--मनोवैज्ञानिक निरंतरता, वैचारिक निरंतरता, चारित्रिक निरंतरता, जिसका हमने आत्मा या ऐसा ही कोई नामकरण कर दिया है। हम जानना चाहते हैं कि क्या विचार निरंतर रहता है? अर्थात मैंने ध्यान लगाया है, मैंने अनेक बातों का अभ्यास किया है, मैं अपना पुस्तक-लेखन अभी पूरा नहीं कर पाया हूं, अभी मेरी आजीविका शेष है, अभी मैं दुर्बल हूं और सबल होने के लिए मुझे समय चाहिये, मैं अपने सुखों को बनाए रखना चाहता हूं

Edited with the demo version of
Infix Pro PDF Editor

To remove this notice, visit:
www.iceni.com/unlock.htm

frustration, is it not? I am doing something, and I don't want to end it; I want continuity in order to fulfill myself. Now, is there fulfillment through continuity? Obviously, there is fulfillment of a sort through continuity. If I am writing a book, I don't want to die until I have finished it; I want time to develop a certain character, and so on.	इत्यादि, परंतु मुझे डर है कि मृत्यु इस सब को थाम देगी। इस प्रकार, मृत्यु एक प्रकार की खिन्नता है, कुंठा है, नहीं क्या? मैं कुछ कर रहा हूं और उसका थम जाना मुझे मंजूर नहीं, मैं स्वयं की पूर्ति के लिये निरंतरता चाहता हूं। तो, क्या निरंतरता द्वारा स्वयं की पूर्ति की जा सकती है। स्पष्ट है कि निरंतरता द्वारा एक तरह की पूर्ति तो होती ही है, यदि मैं कोई पुस्तक लिख रहा हूं तो उसे पूरा करने तक मैं मरना नहीं चाहूंगा, एक चरित्र विशेष विकसित करने के लिये या इसी प्रकार के अन्य कार्यों के लिये समय तो चाहिये ही।
-3-	–३–
So, there is fear of death only when there is the desire to fulfill oneself because to fulfill oneself, there must be time, longevity, continuity. But if you can fulfill yourself from moment to moment, you are not afraid of death.	कामनाओं का काल में विस्तार है निरंतरता तो मृत्यु से भय होता है जब स्वयं की पूर्ति की इच्छा रहती है, क्योंकि स्वयं की पूर्ति के लिये समय चाहिये, दीर्घायु चाहिये, निरंतरता चाहिये। परंतु यदि आप स्वयं को पल प्रति पल पूरित कर सकते हैं तो आप मृत्यु से भयभीत नहीं रहेंगे।
Now, our problem is how to have continuity in spite of death, is it not? And you want an assurance from me, or, if I don't assure you of that, you go to somebody else, to your gurus, to your books, or to various other forms of distraction and escape. So, you listening to me and I talking to you, we are going to find out together what we actually mean by continuity, what it is that continues—and what we want to continue. That which continues is obviously a wish, a desire, is it not? I am not powerful but I would like to be; I have not built my house but I would like to build it; I have not got that title but I would like to get it; I have not amassed enough money but I will do so presently; I would like to find God in this life—and so on and on. So, continuity is the process of want. When this is put an end to, you call it death, do you not? You want to continue desire as a means of achievement, as a process through which to fulfill yourself. Surely, this is fairly	तो हमारी समस्या है कि मृत्यु के बावजूद निरंतरता कैसे बनाई रखी जाए। और, आप मुझसे इस बात की निश्चितता चाहते हैं, अथवा, यदि मैं यह निश्चितता नहीं दे पाया तो आप किसी अन्य के पास चले जाएंगे, अपने गुरु, अपने ग्रंथों या ध्यान बंटाने के व पलायन के तमाम तौर–तरीकों की शरण में चले जाएंगे। तो आप मुझे सुनते हुए और मैं आपसे वार्ता करते हुए––हम सभी साथ–साथ यह जानने की ओर बढ़ रहे हैं कि निरंतरता से वास्तव में हमारा अभिप्राय क्या है, वह क्या है जो निरंतर रहता है––और किसे हम निरंतर बनाए रखना चाहते हैं, ज़ाहिर है कि वह है कामना, इच्छा, है न? मैं शक्तिसंपन्न नहीं हूं, परंतु होना चाहता हूं, मैंने अपना मकान अभी नहीं बनाया है, पर बनवाना चाहता हूं, मैंने अमुक उपाधि प्राप्त नहीं की है, परंतु उसे प्राप्त करना चाहता हूं, मैंने पर्याप्त धन संचय नहीं किया है, परंतु शीघ्र ही करना चाहता हूं, मैं इसी जीवन में ईश्वर–प्राप्ति चाहता हूं, आदि, आदि। तो निरंतरता कामना का प्रक्रम है। जब इसका अंत हो जाता है तो आप उसे मृत्यु कह देते हैं, है न? आप इच्छा को

simple, is it not?	उपलब्धि के माध्यम के रूप में निरंतर रखना चाहते हैं, एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में जिसके माध्यम से आप स्वयं को पूरित करना चाहते हैं। यह बिल्कुल सीधी-सरल बात है, है न?
-4-	-४-
Thought Continues	विचार निरंतर रहता है
Now, obviously, thought continues in spite of your physical death. This has been proved. Thought is a continuity because, after all, what are you? You are merely a thought, are you not? You are the thought of a name, the thought of a position, the thought of money; you are merely an idea. Remove the idea, remove the thought, where are you? So, you are an embodiment of thought as the 'me'. Now you say thought must continue because thought is going to enable me to fulfill myself, that thought will ultimately find the real. Is that not so? That is why you want thought to continue. You want thought to continue because you think thought is going to find the real, which you call happiness, God, or what you will.	शारीरिक मृत्यु के उपरांत भी विचार निरंतर बना रहता है। इसे सिद्ध भी किया जा चुका है। विचार एक निरंतरता है, क्योंकि आप आखिर हैं क्या? आप केवल एक विचार ही तो हैं, या नहीं? आप किसी नाम का विचार हैं, किसी पद-प्रतिष्ठा का विचार हैं, धन का विचार हैं, आप केवल धारणा हैं। इस धारणा को, इस विचार को तनिक हटा दीजिए, तब आप कहां हैं? इस प्रकार आप 'मैं' के रूप में साकार विचार ही हैं। इसीलिए तो आप चाहते हैं कि विचार निरंतर रहना चाहिए, क्योंकि विचार ही मुझे स्वयं को पूरित करने के योग्य बनाएगा, यह विचार ही अंततोगत्वा वास्तविकता को पा लेगा। ऐसा ही है न? इसीलिए आप विचार की निरंतरता चाहते हैं। आप विचार की निरंतरता इसलिए चाहते हैं क्योंकि आप समझते हैं कि विचार ही उस वास्तविकता को पाएगा जिसे आप सुख-शांति कहते हैं, ईश्वर कहते हैं या कुछ और कह देते हैं।
Now, through the continuity of thought, do you find the real? To put it differently, does the thought process discover the real? Do you understand what I mean? I want happiness, and I search for it through various means—property, position, wealth, women, men, or whatever it be. All that is the demand of a thought for happiness, is it not? Now, can thought find happiness?	तो क्या विचार की निरंतरता से आप वास्तविकता को पा सकते हैं? दूसरे शब्दों में यदि पूछें तो क्या विचार-प्रक्रम वास्तविकता का अन्वेषण कर पाएगा? आप समझ रहे हैं न कि मेरा अभिप्राय क्या है? मैं सुख-चैन चाहता हूं, और भिन्न-भिन्न साधनों-माध्यमों से इसे तलाशता हूं--संपत्ति, प्रतिष्ठा, संपदा, स्त्री, पुरुष या और जो कुछ भी। सुख-चैन के लिये यह सब विचार की मांग है, है न? तो क्या विचार सुख-चैन पा सकता है?
-5-	-५-
In Renewal, There Is No Death	नवीकरण में मृत्यु नहीं है
So, our question is: Can there be a	तो, मेरा प्रश्न हैः विचार-प्रक्रिया की निरंतरता

renewal, a regeneration, a freshness, a newness, through the continuity of the thought process? After all, if there is renewal, then we are not afraid of death. If for you there is renewal from moment to moment, there is no death. But there is death, and the fear of death, if you demand a continuity of the thought process.	द्वारा क्या कोई नवीकरण, नवजीवन, नूतनता या नवीनता संभव है? आखिर यदि नित-नूतनता रहेगी तो हम मृत्यु से भयभीत क्यों रहेंगे। आपके लिये यदि प्रतिपल नूतन है तो मृत्यु है ही नहीं। परंतु यदि आप विचार-प्रक्रिया की निरंतरता चाहते हैं तो आपके लिये मृत्यु भी है और उसका भय भी।
-6-	-६-
Renewal by Ending the Thought Process	विचार-प्रक्रिया के अवसान द्वारा नवीकरण
There is hope only when I see the truth that through continuity there is no renewal. And when I see that, what happens? Then I am only concerned with the ending of the thought process from moment to moment—which is not insanity!	जब मैं इस सत्य को जान जाता हूं कि निरंतरता द्वारा नवीकरण संभव नहीं है, तभी मुझमें आशा अवतरित होती है। अब, जब मैं इसे जान जाता हूं तब क्या होता है? तब विचार-प्रक्रम का पल प्रति पल अवसान कर देने से ही मेरा सरोकार रहता है--और यह मानसिक अस्वस्थता बिल्कुल नहीं है।
-7-	-७-
Love Is Its Own Eternity	प्रेम स्वयं अपनी नित्यता है
And when there is love, there is no death; there is death only when the thought process arises. When there is love, there is no death, because there is no fear; and love is not a continuous state—which is again the thought process. Love is merely being from moment to moment. Therefore, love is its own eternity.	और यदि प्रेम है तो मृत्यु नहीं है, मृत्यु तभी है जब विचार-प्रक्रिया आरंभ हो जाती है। यदि प्रेम है तो मृत्यु नहीं है, क्योंकि तब कोई भय नहीं रहता और, प्रेम कोई निरंतरता की अवस्था नहीं है, क्योंकि वह तो पुनः विचार-प्रक्रिया ही होगी। प्रेम है केवल पल प्रति पल जीना। अतः प्रेम स्वयं अपनी नित्यता है।
-8-	-८-
Death and Immortality	मरण व अमरता
In death we seek immortality; in the movement of birth and death we long for permanency; caughat in the flux of time we crave for the timeless; being in shadow we believe in light. Death does not lead to immortality; there is immortality only in life without death. In life we know death for we cling to life.	मृत्यु में हम अमरता तलाशते हैं, जन्म और मरण के चलते चक्र में हम स्थायित्व चाहते हैं, समय के प्रवाह में उलझे हुए हम शाश्वतता की लालसा करते हैं। मृत्यु अमरत्व की ओर नहीं ले जाती, अमरत्व तो मृत्युविहीन जीवन में है। चूंकि हम जीवन को कस कर थामे रहते हैं, इसीलिए जीवन में हमें मृत्यु दिखने लगती है।

We gather, we become; because we gather, death comes, and knowing death, we cling to life.	हम संग्रह करते हैं, हम कुछ बन जाते हैं, और चूंकि हम संग्रह कर लेते हैं अतः मृत्यु के चंगुल में आ जाते हैं, और मृत्यु का भान होते ही हम जीवन को पुनः कसकर थाम लेते हैं।
The hope and belief in immortality is not the experiencing of immortality. Belief and hope must cease for the immortal to be. You the believer, the maker of desire, must cease for the immortal to be. Your very belief and hope strengthen the self...	अमरता में विश्वास करना, उसकी आशा रखना अमरता का अनुभव नहीं है। शाश्वत की विद्यमानता के लिए विश्वास और आशा का अंत होना ज़रूरी है। अमरत्व के लिए आपके विश्वासकर्ता वाले रूप का, इच्छाकर्ता वाले रूप का अवसान हो जाना आवश्यक है। आपके ये विश्वास और आशा ही तो आपके अहं को पुष्ट करते हैं।
-9-	-९-
The Present Is the Eternal	शाश्वत केवल वर्तमान है
We do not understand life, the present, so we look to the future, to death...	हम जीवन को, वर्तमान को समझ नहीं पाते, इसीलिए हमारी दृष्टि भविष्य पर, मृत्यु पर लगी रहती है।
The present is the eternal. Through time the timeless is not experienced. The now is ever existent; even if you escape into the future, the now is ever present.	वर्तमान ही शाश्वत है। समय के माध्यम से समयातीत को अनुभूत नहीं किया जा सकता। वर्तमान की विद्यमानता सदैव रहती है--भले ही आप भविष्य में पलायन करते रहें, परंतु वर्तमान तो विद्यमान रहता ही है।
-10-	-१०-
Is There Enduring Joy?	क्या कोई आनंद चिरस्थायी होता है?
Is there a possibility of finding enduring joy? There is, but to experience it there must be freedom. Without freedom, truth cannot be discovered, without freedom there can be no experience of the real. Freedom must be sought out-— freedom from saviors, teachers, leaders; freedom from the self-enclosing walls of good and bad; freedom from authority and imitation; freedom from self, the cause of conflict and pain...	क्या कोई चिरस्थायी आनंद पा लेने की संभावना है? है तो, परंतु उसे अनुभूत करने के लिए स्वतंत्रता होनी चाहिए । स्वतंत्रता के बिना सत्य का अन्वेषण संभव नहीं है, स्वतंत्रता के बिना वास्तविकता का अनुभव संभव नहीं है। स्वतंत्रता की खोज ज़रूरी है--उद्धारकों से स्वतंत्रता, गुरुओं से, नेताओं से स्वतंत्रता, अच्छे-बुरे की स्वनिर्मित चारदीवारी से स्वतंत्रता, द्वंद्व और दुख के कारक अहं से स्वतंत्रता...
In the bliss of the real the experiencer and the experience cease. A mind-heart that is burdened with the memory of yesterday	यथार्थ के आनंद में अनुभव तथा अनुभवकर्ता, दोनों का अवसान हो जाता है। अतीत की

cannot live in the eternal present. Mind-heart must die each day for eternal being...	स्मृति से बोझिल दिलो-दिमाग वर्तमान की शाश्वतता में सांस नहीं ले पाते। शाश्वत में जीने के लिये इनका प्रतिदिन अवसान हो जाना एकदम ज़रूरी है...
Die to your experience, to your memory. Die to your prejudice, pleasant or unpleasant. As you die there is the incorruptible; this is not a state of nothingness but of creative being. It is this renewal that will, if allowed, dissolve our problems and sorrows, however intricate and painful. Only in death of the self is there life.	अपने अनुभव और अपनी स्मृति के लिए आप मरे समान हो जाइए और, अपने पूर्वाग्रह के लिए भी, चाहे वह प्रिय हो या अप्रिय। इनके प्रति जब आप मनोवैज्ञानिक रूप से मृत हो जाएंगे तब उस निर्दोष अवस्था का आविर्भाव होगा--यह अवस्था शून्यता की नहीं बल्कि रचनात्मकता की होगी। यदि यह अवस्था घटित होने दी जाए, तो यह नवीकरण की अवस्था होगी और यह हमारी समस्याओं और व्यथाओं को तिरोहित कर देगी--चाहे वे कितनी ही जटिल व पीड़ादायी क्यों न हों। केवल अहं के, स्व के अवसान में ही जीवन विद्यमान रहता है।
-11-	-११-
The Fear of Death Is the Fear of Letting Go of What We Know	ज्ञात के खो जाने का भय ही मृत्युभय है
So, the self is a bundle of memories and nothing more. There is no spiritual, entity as the 'me' or apart from the 'me' because when you say there is a spiritual entity apart from the 'me', it is still the product of thought; therefore, it is still within the field of thought, and thought is memory. So, the 'you', the 'me', the self—higher or lower, at whatever point it may be fixed—is memory...	अब, अहं हमारी स्मृतियों के जमघट के अतिरिक्त कुछ और नहीं है। कोई आध्यात्मिक अस्तित्व न तो अहं के रूप में रहता है और न इससे पृथक किसी रूप में, क्योंकि जब आप कहते हैं कि मुझसे पृथक कोई आध्यात्मिक अस्तित्व है तो वह भी विचारों की ही उपज होगा और इसकी स्थिति विचारों की परिधि में ही होगी--और, विचार तो स्मृति ही होता है। तो 'आप', 'मैं', स्व--उच्च या निम्न, आप इसे चाहे जो स्थान दें--यह होता स्मृति ही है...
What do we mean by death? Surely, a thing that is used constantly comes to an end; any machine that is constantly used wears out. Similarly, a body, being in constant use, comes to an end through disease, through accident, through age. That is inevitable—it may last a hundred or ten, but being used, it must wear out. We recognize and accept that because we see it happening continually.	मृत्यु से हमारा क्या तात्पर्य है? निश्चय ही, जिस वस्तु का अनवरत प्रयोग किया जाएगा, उसका अंत भी आएगा। कोई भी मशीन यदि अनवरत प्रयुक्त होती रहे तो घिस-घिसाकर वह समाप्त हो जाएगी। इसी प्रकार अनवरत प्रयुक्त होने के कारण प्रत्येक शरीर का रोग, दुर्घटना या आयु-प्रभाव द्वारा अंत हो जाता है। यह अपरिहार्य है--चाहे यह शरीर सौ वर्ष चले या सिर्फ दस वर्ष, परंतु प्रयुक्त होते-होते इसका क्षय होता ही है। हम इसे जान रहे हैं

	और स्वीकार करते हैं, क्योंकि ऐसा होता हुआ हम निरंतर देख रहे हैं।
-12-	-१२-
The Known	ज्ञात
So, you have no direct relationship with the unknown, and therefore you are afraid of death.	तो, आप का अज्ञात से कोई सीधा संबंध नहीं है और इसीलिए आप मृत्यु से घबराते हैं।
What do you know of life? Very little. You do not know your relationship to property, to your neighbor, to your wife, to ideas. You know only the superficial things, and you want to continue the superficial things. For God's sake, what a miserable life! Is not continuity a stupid thing?	आप जीवन के बारे में क्या जानते हैं? बहुत थोड़ा। अपनी संपत्ति से, अपने पड़ोसी से, अपनी पत्नी से, अपनी धारणाओं से अपने संबंध को आप कहां जानते हैं? आप केवल सतही चीज़ों को जानते हैं और इन्हीं की निरंतरता चाहते हैं। बाखुदा, कैसी बदहाल कर डाली है यह ज़िंदगी! निरंतरता क्या कोई अक्लमंदी की बात है?
-13-	-१३-
Death and Life Are One	मृत्यु और जीवन एक हैं
It is a stupid person that wants to continue—-no man who understood the rich feelings of life would want continuity. When you understand life, you will find the unknown, for life is the unknown, and death and life are one. There is no division between life and death: it is the foolish and the ignorant who make the division, those who are concerned with their body and with their petty continuity. Such people use the theory of reincarnation as a means of covering up their fear, as a guarantee of their stupid little continuity. It is obvious that thought continues; but surely, a man who is seeking truth is not concerned with thought, for thought does not lead to truth. The theory of the 'me' continuing through reincarnation towards truth is a false idea, it is untrue. The 'me' is a bundle of memories, which is time, and the mere continuation of time does not lead you to the eternal, which is beyond time. The fear of death ceases only when	वह मूर्ख है जो निरंतरता चाहता है--जिसने जीवन का सार समझ लिया है, वह निरंतरता नहीं चाहेगा। आप जब जीवन को समझ लेते हैं तो आपको अज्ञात का दर्शन हो जाता है क्योंकि जीवन ही वह अज्ञात है। और, मृत्यु व जीवन एक ही हैं। जीवन और मृत्यु के बीच जिन्होंने विभाजन खड़ा किया है वे मूर्ख हैं, अज्ञानी हैं और वे अपने शरीर और अपनी संकीर्ण निरंतरता से ही सरोकार रखते हैं। ऐसे ही लोग, अपने भय को ढांपने के लिये, अपनी मूर्खतापूर्ण तुच्छ निरंतरता की गारंटी के लिये पुनर्जन्म के सिद्धांत का उल्लेख करते हैं। यह बात तो साफ है कि विचार निरंतर रहता है, परंतु यह भी निश्चित बात है कि जो व्यक्ति सत्य की तलाश में हो, उसका सरोकार विचार के इर्द-गिर्द नहीं रहता क्योंकि विचार सत्य तक नहीं ले जा सकता। पुनर्जन्म के माध्यम से 'अपनी' निरंतरता द्वारा सत्य की ओर जाने का सिद्धांत मिथ्या है, असत्य है। यह 'मैं' तो स्मृतियों का पुलिंदा है, और स्मृति है समय, अतः केवल समय की निरंतरता आपको उस शाश्वतता तक नहीं ले जा सकती जो समय से

the unknown enters your heart. Life is the unknown, as death is the unknown, as truth is the unknown.	परे है। मृत्यु का भय आपके हृदय से तभी जा पाएगा जब उसमें अज्ञात का प्रवेश हो जाएगा। जीवन वह अज्ञात है, जैसे मृत्यु अज्ञात है, जैसे सत्य अज्ञात है।
-14-	-१४-
Can We Let Go of the Self?: Don't Miss the Whole Marvelous Show	क्या हम अहं को जाने दे सकते हैं? जीवन की अद्‌भुत समग्रता से वंचित न रहें
Life is the unknown, sir; but we cling to one small expression of that life, and that which we cling to is merely memory, which is an incomplete thought; therefore, that which we cling to is unreal, it has no validity. The mind dings to that empty thing called memory, and memory is the mind, the self, at whatever level you like to fix it. So, mind, which is in the field of the known, can never invite the unknown. It is only when there is the unknown, a state of complete uncertainty, that there comes the cessation of fear and with it the perception of reality.	महोदय, जीवन अज्ञात है, परंतु जीवन की एक छोटी सी झांकी से ही हम चिपके रहते हैं, और जिससे हम चिपके रहते हैं, वह है स्मृति जो कि एक आधा-अधूरा विचार ही है। इस प्रकार हम जिससे चिपके रहते हैं, वह अयथार्थ है, अप्रामाणिक है। मन इस स्मृति नामक खोखली चीज़ से चिपका रहता है, और, यह स्मृति है मन अर्थात स्व--अब चाहे इस अहं या स्व को किसी भी स्तर पर बैठा दिया गया हो। ज्ञात की परिधि में स्थित इस मन में अज्ञात का कभी प्रवेश नहीं हो सकता। भय के अवसान की अवस्था और साथ ही यथार्थ की दृष्टि तभी आ सकती है जब अज्ञात की अवस्था आ जाए, पूर्ण अनिश्चितता की अवस्था आ जाए ।
-15-	-१५-
What Is God?	ईश्वर क्या है?
How are you going to find out? Are you going to accept somebody else's information? Or are you going to discover for yourself what God is?	आप यह कैसे जान पाएंगे? क्या आप किसी अन्य व्यक्ति की सूचना को सत्य रूप में स्वीकार कर लेंगे? अथवा, आप स्वयं इसका अन्वेषण करेंगे कि ईश्वर क्या है?

Edited with the demo version of
Infix Pro PDF Editor

To remove this notice, visit:
www.iceni.com/unlock.htm